RAJYA SABHA

Monday, the 11th August, 1980|*the 20th Sravana,* 1902 (*Saka*)

The House met at eleven of the clock, Mr. Chairman in the Chair.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

MR. CHAIRMAN: Very thin House day. Question No. 261. Mr. Pradhan.

SHRI SADASHIV BAGAITKAR: Question No. 261. He has gone for it, Sir.

MR. CHAIRMAN: Mr. Bagaitkar is here waiting for Deepavali, I think.

Circulation figures of 'dailies' published from Calcutta

*261. SHRI PATITPABAN PRADHAN:
SHRI SADASHIV BAGAITKAR:†
SHRI LADLI MOHAN NIGAM:

Will the Minister of INFORMATION AND BROADCASTING be pleased to state the circulation figures for 1979 of the dailies published from Calcutta namely, (i) Amrita Bazar Patrika, (ii) Calcutta Observer, (iii) Hindusthan Standard, (iv) Satyayug (Bengali), (v) Janani (Bengali), (vi) Ananda Bazar Patrika (Bengali), (vii) Jugantar (Bengali), and (viii) Basumati (Bengali) and the quantity of newsprint allotted to each of these dailies during the year 1979-80?

THE MINISTER OF INFORMATION AND BROADCATING AND SUPPLY AND REHABILITATION (SHRI V. P. SATHE): The requisite information may kindly be seen in the enclosed statement.

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri Sadashiv Bagaitkar.

Statement

The claimed circulation figures and newsprint quota allotted in 1979-80 are given below:

Name of the daily	Claimed Circulation	News print Quantity allotted (in mts)
1. Amrita Bazar Patrika	126032	3369.60
2. Calcutta Observer	9750	59.18
3. Hind sthan Standard	2649	12.80
4. Satyay g	16771	219.06
5. Janani	5200	34.55
6. Ananda Bazar Patrika	401485	7701.91
7. J gantar	320711	5576.52
8. Bas mati	17312	220.24

श्री सदाशिव बागाईतकर : श्रीमन्, मंत्री महोदय ने जो स्टटमेट दी है, जो आँकड़े दिये हैं वे तो मैंने पढ़ लिये हैं। असल में सवाल यह है कि अखबारों का सरकुलेशन जो वह क्लेम करते हैं मैं बताना चाहता हूं कि उनका अपना एक आडिट ब्यूरो सरकुलेशन का होता है। आपकी सरकार ने एडवर्टाजिमेंट लेने के लिये, क्वालीफाई करने के लिये ए तो आँकड़े उनको देने पड़ते हैं और दूसरे कई ऐसे बड़े अखबार हैं जिनको डायरेक्ट इम्पोर्ट लाइसेंस प्राप्त है। मैंने यह सवाल इसलिये पूछा है जैसे बड़े अखबार हैं 'बैनेट कोलमैन एंड कंपनी' और 'एक्सप्रेस ग्रुप' इनके लिये काफी अर्से से शिकायत है। इन लोगों ने अपना एक स्थान कायम कर लिया है। इनको सरकार का आशीर्वाद प्राप्त है। वे इम्पोर्ट भी काफी करते हैं। सरकुलेशन और इम्पोर्टेड न्यूजप्रिंट उनको सरकार की तरफ दिया जाता है इन दोनों में फायदा हैं। न्यूजप्रिंट में काफी ब्लैक मार्केटिंग चलती है। मै समझता हू यह मंत्री जी की मालूमात की चोजें हैं। सवाल जो मैंने किया और आँकड़े जो मंत्री जी ने दिये उनसे साफ नहीं होता। अमत बाजार पत्रिका

का जो आंकड़ा उन्होंने दिया है सरकुलेशन का वह 1 लाख 26 हजार 32 है और न्यूज प्रिंट क्वांटिटी एलोटिड है वह है 3368.60। यह हर महीने की उनकी एलाटमेंट है यह मानकर मैं चलता हूं। अगर ऐसा नहीं है तो मंत्री जी बता देंगे। हम यह गिनती नहीं कर सकते कि कितने न्यूजप्रिन्ट में कितने अखबार निकलते हैं। जब तक यह मालूम नहीं होगा तब तक इम्पोर्टेड न्यूजप्रिंट का मिसयूज होता है या नहीं इसका खुलासा नहीं होगा।

श्री सभापति : आपने सवाल तो पूछा ही नहीं '

श्री सदाशिव बागाइतकर : बुनियादी तौर पर एलोकेशन का बेसिस क्या है, सवाल यह है। जब तक यह आंकड़े नहीं आयेंगे तब तक हम को कोई जानकारी नहीं होगी। मैं चाहूंगा कि इसका खुलासा करें। दूसरी बात मैं इसी संदर्भ में यह कहना चाहूंगा क्योंकि न्यूजप्रिंट की बहुत कमी है इसलिये हम को फारेन एक्सचेंज इस पर खर्च करना पड़ता है। आपको पता होगा कि न्यूजप्रिंट के इस्तेमाल पर किसी किस्म का नियंत्रण नहीं है, गैर जरूरी, अनावश्यक और एडवर्टीजमेंट से लेकर सपलीमेंट तक सभी चीजें छपती हैं। It is a waste of newsprint. मैं चाहूंगा मंत्री जी स्पष्ट करें कि बेसिस क्या है और जिस तरह का मिसयूज इम्पोर्टेड न्यूजप्रिंट का हो रहा है क्या उस पर किसी किस्म का नियंत्रण रखने का विचार है यह भी आप बता दें तो मैं आपका आभारी हूंगा '

MR. CHAIRMAN: Mr. Bagaitkar, though the Minister has got up to answer it, I must say that there is not even a hint,

इशारा भी नहीं है इसमें कि सवाल उठेगा या नहीं उठेगा। आपने फैक्चुअल में पूछा, फैक्चुअल मे उन्होंने बता दिया।

SHRI SADASHIV BAGAITKAR: Sir, if you will allow me . . .

MR. CHAIRMAN: If he is ready, he will answer it. Otherwise, he will take note of it.

SHRI V. P. SATHE: I will answer in the same vein, Sir.

SHRI SADASHIV BAGAITKAR: I am merely making an enquiry.

SHRI V. P. SATHE: That is right.

माननीय सदस्य ने जहां तक जानकारी मांगी थी वह जानकारी उनको दी गई है। जानकारी के कुछ आधार भी हैं। वह और जानकारी चाहेंगे तो वह जानकारी भी हम उनको देने के लिए तैयार हैं। जो कुछ अभी तक नीति है उसका कुछ आधार है। कितने सरकूलेशन के लिए कितना टन दिया जाता है, इसका भी कुछ आधार है, निराधार रूप से नहीं दी जाती है। लेकिन मै यह मानता हूं कि दुरुपयोग हो रहा है और काला बाजार में भी कभी कभी न्यूजप्रिन्ट जाते हैं। इसमें एक कारण नहीं है, अन्य भी कई कारण हैं। एक न्यूजप्रिन्ट पालिसी यहां कुछ दिन पहले रखी गई थी। उसमें मैंने कुछ सुझाव भी रखे हैं कि इस तरह से इन त्रुटियों को पूरा किया जा सकता है। मेरा विश्वास है कि उन पर अमल होने पर ये त्रुटियां कुछ हद तक दूर की जा सकती हैं और यह बीमारी ठीक हो सकती है। आपके पास अगर कोई सुझाव हो तो हम उन पर विचार करने के लिए तैयार हैं।

श्री सदाशिव बागाईतकर : श्रीमन्, मै मंत्री जी का आभारी हूं कि उन्होंने मान लिया है कि इसमें काफी हद तक मिसयूज होता है।

श्री वी० पी० साठे : काफी हद तक नहीं, कुछ हद तक।

श्री सदाशिव बागाईतकर : कुछ हद तक मिसयूज होता है, यह तो आपने मान लिया है । मेरा सवाल बुनियादी था और वह यह था कि जब आपने यह मान लिया है कि इसका कुछ हद तक मिसयूज होता है तो मैं यह जानना चाहूंगा कि अगर कोई न्यूजपेपर इस तरह से न्यूजप्रिन्ट का, खासतौर पर इम्पोर्टेड न्यूजप्रिन्ट का इस्तेमाल गैर-कानूनी ढंग से करता है तो क्या आपने ऐसे न्यूजपेपर को ब्लैक लिस्ट किया है ? इस तरह के न्यूजपेपर के खिलाफ कुछ उपाय करने का क्या आप कोई सुझाव मानते हैं, यदि हां, तो वे उपाय क्या हैं, यह बताने की कृपा करें ?

श्री वी० पी० साठे : ऐसा सवाल पैदा नही हुआ है कि किस को क्या करते हैं । कुछ अखबार जिनका सरकुलेशन बन्द हैं या एक्सेप्टेशल नहीं है उनको न्यूजप्रिन्ट्स देना बन्द करते हैं । इतना तो कर सकते हैं और फिर एक साल तक तो यह मान लेते हैं लेकिन वह जब तक फिर से सरकुलेशन देकर हमें संतुष्ट नहीं कर लेते हैं और हम चैक करके यह नही देख लेते हैं कि सब कुछ ठीक है या नहीं और जब तक इसकी जांच न हो जाय, तब तक यह उपाय हो सकता है, लेकिन दूसरी कोई पनिशमेन्ट की कानून में गुंजाइश नहीं है । आपकी तरफ से कोई सुझाव हो तो उस पर विचार किया जा सकता है ।

MR. CHAIRMAN: Now Mr. Nigam, Next, Shri Shahi and then Shri Kalyan Roy. That would be the end. The question is a very thin one, there is not enough notice in it.

श्री लाडली मोहन निगम : श्रीमन्, मै नम्रतापूर्वक मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहूंगा कि वे सारी बातों से सदन को अवगत करायें । आपने आठ अखबारों के मामलों के संबंध में आंकड़े दिये हैं । उनमें मैं नम्बर 1 को ही लेता हूं । अमृत बाजार पत्रिका जिसका सरकुलेशन 1,26,032 है । उसको आपने 3368 टन न्यूजप्रिन्ट आवंटित किया है और उसी के साथ हिन्दुस्तान स्टेन्डर्ड जिसका सरकुलेशन 2649 हैं उसको आपने 12 टन दिया है । आप इस बात से मुतफिक होंगे कि करीब करीब एक टन में एक हजार किलो होते हैं और एक किलो में करीब 20 अखबार होते हैं । कहने का मतलब यह हुआ कि एक टन में करीब 20 अखबार छप जाते हैं । आपने 2649 की सरकूलेशन पर 12 टन न्यूजप्रिन्ट दिया और इसी आधार पर अमृत बाजार पत्रिका को 1,26,032 की सरकूलेशन पर 3368 टन और आनन्द बाजार पत्रिका को 401485 की सरकूलेशन पर 7701 टन न्यूजप्रिन्ट दिया हैं । इस तरह से आपके आवंटन में यह जो असंगति है, इस असंगति में क्या ऐसा नहीं मालूम पड़ता है कि आपकी आवंटन नीति समय समय पर स्थिति को देखते हुए और अखबार के प्रभाव को देखते हुए बदल जाया करती है ?

श्री वी० पी० साठे : नहीं, यह बात गलत है ।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : श्रीमन्, मंत्री जी यह मानते हैं और उनको जानकारी है कि इन बड़े अखबारों के अलावा कुछ छोटे अखबार भी हैं जिनका सरकुलेशन इतना व्यापक नही है लेकिन वे अपने सरकूलेशन की फिगर्स को बड़ी दिखाकर के कोटा बढ़ाकर लेते हैं और इस न्यूज प्रिन्ट को वे ब्लैक भी करते हैं और उससे नफा उठाते हैं । मंत्री जी को इस बात की जानकारी है, इसलिये मैं जानना चाहता हूं कि क्या मंत्री जी कोई ऐसी मशीनरी इवाल्व करेंगे जिससे कि इस तरह का जो दुरुपयोग होता है वह रोका

जा सके और अखबार निकालने के नाम पर इस तरह से जो लोग बिजनेस चलाते हैं वह रोका जा सके ?

श्री वी० पी० साठे : सभापति जी, हम यह सोच रहे हैं कि छोटे अखबारों को जो उनकी वाजिब आवश्यकता है उसके अनुसार न्यूज-प्रिन्ट सीट्स में, और समय समय पर यानी उनको रुकना न पड़े, और महीने, दो महीने में उनको मिल जाय तो फिर काले बाजार में लेने की गुंजाइश नहीं रहेगी । काला-बाजार तभी होता है जब उनको मिलता नहीं है । वह उनको मिले इसकी व्यवस्था हम कर रहे हैं । उसके ऊपर हम कुछ कदम उठा रहे हैं। जैसे गणना करके सीट्स हम खुद बना कर देंगे और दो-दो महीने के गैप से देने का विचार करेंगे । इस एक सुझाव को अमल में लाने के लिये हमने इसके ऊपर कार्यक्रम बनाया है । जैसे वह बात होगी, मेरा विश्वास है कि इससे काले-बाजार की प्रक्रिया काफी हद तक कम हो जायेगी ।

MR. CHAIRMAN: Yes, Mr. Kalyan Roy. Yours will be the last question.

SHRI KALYAN ROY: Sir, there are two parts of my question. Firstly, I would like to know whether the Minister is aware that No. 2 Calcutta Observer, No. 3 Hindusthan Standard and No. 4, Satyayug have claimed certain circulation figures which are totaly baseless and fictitious. The Hindusthan Standard is not sold more than 150 copies, the Satyayug is not sold more than 1,000 copies and the Calcutta Observer is not sold more than 150 copies. What mechanism is there to find out whether the claims that they are making are correct or fictitious? Is the Minister aware that there was an inquiry into the use of newsprint by the Satyayug in the last two or three years and all the inquiry reports have found that the present owner, publisher and editor are selling newsprint in the blackmarket and personally made about a few lakhs of rupees? I am quite sure of that and that has appeared in the press also. What mechanism is there to check that this is not sold in the black-market and circulation is exactly what they are claiming? Secondly, Sir what is the use of giving newsprint to these papers because I know particularly about the Amrita Bazar Patrika and the Ananda Bazar Patrika that newsprint is taken by them in order to feed the people with all kinds of bogus information. These two papers, costing fifty paise per copy, are completely blacking out all news of Parliament very systematically and in a calculated way. They are only printing lurid pictures and giving top publicity to all kinds of crime and rape stories. Sir, it is the deliberate policy of the publishers of the Amrita Bazar Patrika and the Ananda Bazar Patrika to publish only light things and make the people very lighthearted. Sir, it is a very serious thing and it does damage to the reading habits of the people. What steps has he contemplated or is he contemplating to see that at least Parliament news is covered as is given by the All India Radio. There should be some mechanism at least to see that the more important news of Parliament is published in these papers which have a terrific influence over the minds of half a million people.

MR. CHAIRMAN: I think you are very much beyond the question.

SHRI V. P. SATHE: I think so, Sir.

SHRI KALYAN ROY: I am only asking related questions. We are entitled to ask these questions.

SHRI V. P. SATHE: Sir, as far as the circulation figures of the Hindusthan Standard and the Satyayug are concerned . . .

SHRI KALYAN ROY: Shri Pranab Mukherjee will be able to give you the true picture.

SHRI V. P. SATHE: . . . the mechanism is our own inspectorate which goes to check. It was found in 1977 and 1978, that is during the previous regime, that the figures given by both the Satyayug and the Hindusthan Standard were correct. Now, later check has not yet been done because of the paucity of staff. In the whole country, for these 14,000 odd newspapers, we have very limited staff to do the later check. So that has not been done, and, therefore, these figures are there.

Another issue that my friend raised was whether the newsprint allocation can be connected with the type of publication. May I say honestly that I do not think that will be correct at all? Soft or good, lighthearted or serious type of printing that the newspapers do, is a matter entirely to be left to them and I do not think Government can do anything in that matter in any way, how they use newsprint for advertisement, to influence, the type of their printing, whether it is lighthearted or serious-hearted.

MR. CHAIRMAN: Now, question No. 262.

श्री जे० के० जैन : मेरा सप्लीमेंटरी है। मैं बड़ी देर से हाथ उठा रहा था, मेरी सप्लीमेंटरी इसी के बारे में है। सर, आप पीछे वालों की तरफ ध्यान रखें।

श्री सभापति : मैं यहां नाम नोट करता जाता हूं जिसका हाथ देखता हूं। पीछे वाले जल्दी हाथ उठायें तो ज्यादा मेहरबानी होगी। अब बैठ जाईये। You are too late. I have ruled question No. 262 now.

SHRI PILOO MODY: He has been deprived of a short notice; give him the opportunity today, though it is a bad practice.

श्री सभापति : हमारे यहां ला मे कहते हैं: *Diligentia non dormantibus.* That is those who are vigilant and not sleeping get the assistance. I am writing down the names now.

SHRI PILOO MODY: Writing down names is a bad practice.

श्री जे० के० जैन : हम यहां पहले से हाथ उठा रहे थे आपने देखा नहीं।

श्री सभापति : मैं देख चुका हूं. हर दफे देख चुका हूं . . . (*Interruptions*). यहां बटन दबाते जाय।

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: Sir, You should announce the name, not the question No.

श्री हरी शंकर भाभड़ा : मेरा सुझाव है कि आप कृपया सदस्य का नाम बोलें। आप उठकर सिर्फ नाम पुकारें।

श्री सभापति : जो एक दफा कह दिया तो कह दिया।

श्री हरी शंकर भाभड़ा : मैं नाम बोलने के लिए कहने खड़ा हुआ हूं। आप संख्या की बजाय सदस्य का नाम बोलिए।

*262. [*The quetioner (Shri M. S. Ramachandran) was absent. For answers* vide *col.* 82—84 *infra.*]..

Sick Thermal Power Units

*263. SHRI SURENDRA MOHAN:
SHRI RAMAKRISHNA HEGDE:†

Will the Minister of ENERGY AND COAL be pleased to state:

(a) whether there is any proposal under Government's consideration to revamp the sick thermal power units;

---

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri Ramakrishna Hegde.